## आरती श्रीसांबाची ८५

जय देव जय देव जय पार्वतिरमणा। हर पार्वतिरमणा। आरती ओवाळू तुझिया निजचरणा।।ध्रु.।। कर्पुरगौर भुजंगाभरणा त्रिनयना । नंदीवाहन गंगाधर मर्दन मदना । शिव शिव शिव शिव सांबा पातक संहरणा। नीलकंठा स्वामी हे पंचवदना।।१।। रुंडमाळा गळा स्मशानस्थलवासा। त्रिपुरांतक बिल्वप्रिय वैराग्यवेशा । मुसळ तोमर डमरू त्रिशूळ करिं फरशा । धारण भस्म निवारण दुर्धर भवपाशा।।२।। निर्विकार निरंजन निर्गुण सदाशिवा। भालचंद्रा देवा हर हर महादेवा। त्रिविध ताप निवारुनि तारिसि जडजीवा। माणिकदास शरण तुज एक्या भावा।।३।।